Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ वरलक्ष्मी व्रत कथा ॥

॥ जय माँ वरलक्ष्मी ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ देवी का चारुमति को संदेश ॥

यह वरलक्ष्मी व्रतम की प्रचलित चारुमति कथा का स्वतंत्र हिंदी रूपांतरण है। क्षेत्रीय पुस्तिकाओं में पात्र और पूजा के विवरण बदल सकते हैं।

एक बार माता पार्वती ने भगवान शिव से पूछा कि गृहस्थ जीवन में मंगल और समृद्धि की कामना करने वालों के लिए कौन-सा व्रत बताया गया है। शिव ने श्रावण पूर्णिमा से पहले आने वाले शुक्रवार को वरलक्ष्मी की पूजा का प्रसंग सुनाया।

कुंडिन नाम के नगर में चारुमति रहती थीं। वे परिवार के सदस्यों का आदर करतीं, पड़ोसियों से सौम्य व्यवहार रखतीं और घर के काम मन लगाकर करती थीं। लोककथा के अनुसार उनके आचरण से प्रसन्न होकर माता लक्ष्मी एक रात स्वप्न में प्रकट हुईं।

देवी ने कहा कि श्रावण पूर्णिमा से पहले के शुक्रवार को घर स्वच्छ करके कलश में उनका आवाहन करो। फूल, दीप और नैवेद्य से पूजा करो तथा मन में सबके कल्याण की भावना रखो। चारुमति ने जागने पर यह स्वप्न अपने घर में सुनाया और उत्सव की तैयारी करने लगीं।

समाचार सुनकर नगर की अन्य स्त्रियाँ भी साथ आईं। सबने मिलकर पूजा की जगह सजाई, कलश रखा और श्रद्धापूर्वक देवी की आराधना की। कथा में इस सामूहिक तैयारी को घर और समुदाय के मंगल से जोड़ा गया है।

॥ सामूहिक पूजा और कथा का संदेश ॥

नियत शुक्रवार को चारुमति और उनकी सखियों ने स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहने। उन्होंने चावल पर कलश स्थापित किया, पत्तों और नारियल से उसे सजाया, दीप जलाया और वरलक्ष्मी का स्मरण किया। अपनी परंपरा के अनुसार उन्होंने पवित्र सूत्र भी बाँधा।

कथा के अलौकिक वर्णन में कहा जाता है कि प्रदक्षिणा और पूजा के साथ उनके घर आभूषणों और वैभव से भर गए। यह आस्था की कथा है; इसे किसी व्यक्ति के लिए निश्चित आर्थिक फल की गारंटी के रूप में न पढ़ें।

पूजा के बाद सबने प्रसाद बाँटा और देवी को प्रणाम किया। चारुमति की कथा से यह परंपरा आगे बढ़ने का वर्णन मिलता है। दक्षिण भारत के कई घरों में आज भी वरलक्ष्मी का पूजन परिवार और समुदाय को साथ लाने का अवसर है।

कथा का भाव

कथा में स्वच्छता, उदारता, साझी तैयारी और कृतज्ञता के साथ देवी का स्मरण प्रमुख है। पूजा की सजावट और सामग्री अपनी सामर्थ्य से रखें। परिवार की स्थापित रीति अलग हो तो उसी के अनुसार पाठ और पूजा की जा सकती है।

॥ ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ॥